HISTORY

B.A.(Hon's)PART–I

Paper–I (Ancient Indian History)

Unit–I (प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series – 19

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को CLICK करें □□□

https://youtu.be/qNP6gPo3wX4

✓✓प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (भाग– 9)

पुरातात्विक स्रोत (Archeological Sources)

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D. COLLEGE)

प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के लिए जो साधन उपलब्ध हैं, उन्हें मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा जा सकता है–

1. साहित्य और अनुश्रुति एवं समकालीन ग्रंथ– हिंदू साहित्य, बौद्ध साहित्य और जैन साहित्य एवं ऐतिहासिक ग्रंथ।

2. विदेशी लेखकों और यात्रियों के विवरण– प्राचीन काल में बहुत से विदेशी भारत आए। उन लोगों ने अपने संस्मरण लिखे, जो भारतीय इतिहास की जानकारी देते हैं।

3. पुरातात्त्विक समाग्री– उत्खनन से प्राप्त प्राप्त सामग्री, मुद्रा, प्राचीन भवन तथा मंदिर, अभिलेख इत्यादि।

✓पुरातात्त्विक समाग्री....

पुरातात्विक साक्ष्यों के अन्तर्गत मुख्यतः उत्खन्न से प्राप्त सामग्री, अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियाँ, चित्रकला आदि आते हैं।

✓ उत्खन्न से प्राप्त सामग्री:–

उत्खनन का अधिकांश कार्य पुरातत्व विभाग के तत्वावधान में होता है और इससे भारत के प्राचीन इतिहास पर काफी प्रकाश पड़ता है। प्रागैतिहासिक काल के समस्त इतिहास की जानकारी उत्खनन कार्य से ही प्राप्त होती हैं। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा, नेवासा आदि प्रागैतिहासिक स्थलों के इतिहास का निश्चय मात्र पुरातत्व उत्खनन से ही संभव हो सका है। शिशुपालगढ़, राजगृह, आरिकमेडु आदि स्थानों से प्राप्त सामग्री के आधार पर भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती हैं। उत्खनन से प्राप्त ईंटों, बर्तनों, औजारों, मूर्तियों, अभिलेखों सिक्कों, हथियारों आदि से भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों पर प्रकाश पड़ता है।

✓अभिलेख –

इतिहास निर्माण में सहायक पुरातत्व सामग्री में अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान है। ये अभिलेख अधिकांशतः स्तम्भों, शिलाओ, ताम्रपत्रों, मुद्राओ , पात्रों, मूर्तियों, गुहाओं में खुदे हुए मिलते हैं। सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के 'बोगजकोई' नामक स्थान से करीब 1400 ई० पु० में पाए गये पर अपने यथार्थ रूप में अभिलेख हमें सर्वप्रथम अशोक के शासन काल में मिलते है। एकमात्र अभिलेख जो हैदराबाद के मास्की नामक स्थान पर स्थित है, में ही अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। अन्य अभिलेखों में उसको देवताओं का प्रिय 'प्रियदर्शी' राजा कहा गया है। अशोक के अभिलेख मुख्यतः ब्राह्मी, खरोष्टी तथा आरमेइक लिपियों में मिलते हैं, जिसमें अधिकांश ब्राह्मी लिपि में खुदे हुए है। इस लिपि को बांये से दायें ओर लिखा जाता है। पश्चिमोत्तर प्रांत में प्रयुक्त होने वाली 'खरोष्ठी लिपि' दायें से बायीं ओर लिखी जाती थी । पाकिस्तान और अफगानिस्तान में पाये गये अशोक के अभिलेखों में प्रयुक्त लिपि आरमेइक व यूनानी थी।

अशोक के बाद अभिलेखों की परम्परा से जुड़े अन्य अभिलेख इस प्रकार हैं– खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, शकक्षत्रप रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख, सातवाहन नरेश पुलुमावी का नासिक गुहालेख, हरिषेण द्वारा लिखित समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तम्भ लेख, मालव नरेश यशोधर्मन का मन्दसौर अभिलेख, चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय का ऐहोल अभिलेख, प्रतिहार नरेश भोज का ग्वालियर अभिलेख, स्कन्दगुप्त का भितरी तथा जूनागढ़ लेख, बंगाल के शासक विजय सेन का देवपाड़ा अभिलेख इत्यादि।

कुछ गैर सरकारी अभिलेख जैसे यवन राजदूत हेलियोडोरस का बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुड़ स्तम्भ लेख, जिसमें द्वितीय शताब्दी ई० पू० में भारत में भागवत धर्म के विकसित होने के साक्ष्य मिलते हैं । मध्य प्रदेश के एरण से प्राप्त वराह प्रतिमा पर हुण राजा तोरमाण के लेखों का विवरण है।

✓ मुद्रायें–

प्राचीन काल में मुद्राये मिट्टी और धातु की बनाई जाती थीं। जिन पर प्रायः किसी नरेश, सामन्त, पदाधिकारी, गण, निगम, व्यापारी अथवा व्यक्ति विशेष के नाम एवं साक्ष्य होते थे। साधारणतया मुद्राओं से हमें 206 ई० पू० से लेकर 300 ई० तक के भारतीय इतिहास की जानकारी प्राप्त होती है। जिन सिक्कों द मुद्राओ पर लेख नहीं होते थे, केवल चिन्ह मात्र होते थे उन्हें

Dr. GUDDI KUMARI (A.N.D COLLEGE)

'आहत सिक्के' (Punch Marked) कहा जाता था। सर्वप्रथम भारत में शासन करने वाले यूनानी शासकों के सिक्कों पर लेख एवं तिथियां उत्कीर्ण मिलती है। सर्वाधिक सिक्के उत्तरी मौर्यकाल में मिलते हैं जो प्रधानतः सीसे, पोटीन, तांबे, काँसे, चांदी और सोने के होते थे। कुषाणों के समय में सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के प्रचलन में थे, पर सर्वाधिक सोने के सिक्के गुप्त काल में जारी किये गये। समुद्रगुप्त के कुछ सिक्कों पर 'यूप', कुछ पर 'अश्वमेघ यज्ञ' कुछ पर वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।

✓ स्मारक एवं भवन–

इतिहास निर्माण में भारतीय स्थापत्यकारों, वास्तुकारों और चित्रकारों ने अपने हथियार, छेनी, और तूलिका के द्वारा विशेष योगदान किया। उनके द्वारा निर्मित प्राचीन इमारतें, मंदिर, मूर्तियों के अवशेषों से भारत की प्राचीन सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिस्थितियों का ज्ञान होता है। खुदाई में मिले महत्वपूर्ण अवशेषों में हड़प्पा सभ्यता, पाटलिपुत्र की खुदाई में चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में लकड़ी के बने राजप्रासाद का ध्वंसावशेष, कौशाम्बी की खुदाई से महाराज उदयन का राजप्रसाद एवं अंतरजीखेड़ा में खुदाई से लोहे के प्रयोग के साक्ष्य, पांडिचेरी के अरिकामेडु में खुदाई से रोमन सिक्के बर्तन आदि के अवशेषों से तत्कालीन जानकारी प्राप्त होती है। उस समय के मंदिर निर्माण की प्रचलित शैलियों में 'नागर शैली' उत्तर भारत में प्रचलित थी। जबकि द्रविड़ शैली दक्षिण भारत में प्रचलित थी। दक्षिणापथ में निर्मित वे मंदिर जिसमें नागर एवं द्रविड़ दोनों शैलियों का समावेश है उसे 'वेसर शैली' कहा गया है। 8 वीं शताब्दी में जावा में निर्मित बोरोबुदुर मंदिर से बौद्ध धर्म की महायान शाखा के प्रचलित होने का प्रमाण मिलता है।

✓ मूर्तियाँ–

प्राचीनकाल में मूर्तियों का निर्माण कुषाण काल से आरम्भ होता है। कुषाणों, गुप्त शासकों एवं उत्तरी गुप्त काल में निर्मित मूर्तियों के विकास में जनसामान्य की धार्मिक भावनाओं का विशेष योगदान रहा है। कुषाणकालीन मूर्तियों एवं गुप्तकालीन मूर्तियों में व्याप्त मूलभूत अन्तर इस प्रकार है– कुषाण कालीन मूर्तियां विदेशी प्रभाव से ओतप्रोत हैं। वहीं पर गुप्तकालीन मूर्त्तियां स्वाभाविकता से ओत–प्रोत हैं। भारहुत, बोधगया, साँची और अमरावती में मिली मूर्तियां, मूर्तिकला में जनसामान्य के जीवन की अति सजीव झांकी प्रस्तुत करती हैं।

✓ चित्रकला :–

चित्रकला से हमें उस समय के जीवन के विषय में जानकारी मिलती है। अजंता के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुन्दर अभिव्यक्ति मिलती है। चित्रों में 'माता और शिशु या "मरणशील राजकुमारी" जैसे चित्रों से गुप्त काल की कलात्मक प्रकाष्ठा का पूर्ण प्रमाण मिलता है। कलाकृतियों से धार्मिक विचारों पर भी प्रकाश पड़ता है। जीवन और कला का अन्योन्याश्रित संबंध है। इसीलिए हम स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि भारतीय इतिहास के अध्ययन में प्राचीन खंडाहर, वास्तु कला, चित्रकला और स्मारक से अत्याधिक सहायता मिलती है।

!!!!!!!!!!धन्यवाद!!!!!!!!!!

Dr. GUDDY KUMARI (A.N.D COLLEGE)